महाभारत

आश्रमवासिक, मुशलपर्व संयुक्त

सबलसिंहचौहानविरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतरामायणकीरीतिपर

दोहा चौपाई में सरलतासे वर्णित है

जिसमें

विदुरकथा, सपत्नीक धृतराष्ट्र और कुंतीका देहत्याग, और अर्जुनका श्रीकृष्णचन्द्रजीके हाल लेनेकेलिये रथारूढ़ होकर द्वारकापुरीमें गमन, दुर्वासादि ऋषियोंका तप निमित्त द्वारकामें गमन, दुर्वासाशाप, मुशलके खण्ड करके समुद्रमें बहाना तहांमछलीका खाकर बालिवत केवटका पाना, उद्धव का श्रीकृष्णजीकी आज्ञानुसार बदरिकाश्रम गमन, राजा जनमेजयका नवयोगियोंसे सम्वाद आदि कथायें संयुक्त हैं

आठवींबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

सन् १९०९ ई० ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

आश्रमवासिकपर्व ॥

जयतिजयति रघुबर श्रीरामा । भक्त जनन को पूरण कामा ॥
बन्दौं गुरु गोविंद सब ताता । बन्दौंपुनि श्रीपितु अरुमाता ॥
बन्दौं अज इन्द्रादिक देवा । बार बार शिवकी करिसेवा ॥
श्रीशक्तिहि प्रभु शारद देवी । सविधिकाव्यजनकीजो सेवी ॥
बन्दौं व्यासादिक मुनि नारद । हनूमान जो ज्ञान विशारद ॥
सबलसिंह यह भारत भाखा । श्रीप्रभु जब अरके दै राखा ॥
औरँगशाह दिलीपति राजत । मित्रसेनि भूपति तहँ गाजत ॥
ये नृप के पुरुषन महँ गाये । सबलसिंह चौहान बनाये ॥
सम्बत सत्रह सै इक्यावन । शुक्लपक्ष दशमी बुधसावन ॥
तब मैं कथा अरम्भन कीन्हा । व्यासदेव को सुमिरणकीन्हा ॥

दो० लक्ष्मीके पति जौन हैं हैं लक्ष्मी वश जाहि ।
सल्लक्षण जामें मिलें बन्दत हौं मैं ताहि ॥
श्रीहरिव्यापक जक्तसब तेहिते बंदिय सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि आश्रमवासिकपर्व ॥

नृपबर यज्ञ सरावत भयऊ । कछुदिनअश्वमशम्भुबलिगयऊ ॥
नृपबर यज्ञ सुभग श्रमभवा । जादिन सभा अनूपम हुवा ॥
द्विजन पूजि सह भाइन बैठो । ठौरहि ठौर भूप जन ऐंठो ॥
कथा बारता विविध प्रकारा । सुरन पूजि नृप कीन्हजुहारा ॥

दो० प्रथमहिं पूजियगणपतिहि जाकी सेवासर्व ।
सबलसिंहचौहानकहि भाषा आश्रमपर्व ॥

सबजन नृप बैठे आसन प्रति । होइनि यज्ञ ठौर होके अति ॥
ताहि समय द्वैपायन आये । नृप सब बंदि भ्रात मुदपाये ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

सिंहासन पर नृप बर राजत। नृत्यहोत बाजन बहु बाजत॥
बैठे भूप सकल पृथिवीके। अर्जुन भीम जीति लीन्हेके॥
बभ्रुबाहन हैं नृप अनुशाला। नीलाम्बुजआदिकमहिपाला॥
औरो बहु बैठे तहँ राजा। विविधतँबूर तबलजहँबाजा॥
तब नृपवर जनमेजय बोले। पाणिजोरिमुख अम्मृतखोले॥
सकल भूप तहँ रहे बखानी। कहा हुते बलि शारँग पानी॥
कहसुनि सुनुनृपवचन सोहाये। तुवहित हेत कहत हमगाये॥

सो० रहे दूरि के राय जे आये नृप यज्ञ महँ।
जेनगीचके आय निजनिज नगरनको गये॥
षष्ठमास की बात यज्ञांतर नृप ह्वै गयो।
रहेदूरि नृपतात द्वैपायन सहभूप मणि॥

नाचहोइ तहँ विविध प्रकारा। मुखमोरहिं जोरहिंसबतारा॥
उछरहिं और केश छिटकावहिं। कुच देखाइकै भूपरिझावहिं॥
द्वादश षोड़श वर्ष कि नारी। करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी॥
तासु आभरण कौन बखानै। पहिरे कर्ण मोतिया सानै॥
त्रिबली तरल तरंग सोहाई। अभिगण नाभि मनोहरताई॥
कटिकरकिङ्किणि तहँछबिछाई। पग नूपुर झनकार सोहाई॥
कुचयुग चक्रवाक जनु साजै। मधुरमधुर ध्वनि पायलबाजै॥

दो० नाचैं नारिमनहुंरति अलक झलक छविहोत।
चंद्रबदनिमृगनैनिशिशु भृकुटी कुटिलउदोत॥
सो० कुंदकलीसमदांत अधर अनूपम चिबुकतिल।
कुचसुचक्रकीभांत तिलप्रसून नाशा सुभग॥

यहिबिधि नृत्यहोत दिनराती। नृपसमाज देखत मुनिपांती॥
द्वैपायन नृपगे आश्रमको। रयनव्यतीतमिलनकोकीको॥
यहिविधिहोत रोजप्रतिउत्सव। आवत देश केर वकील सब॥
जीतत हारत सकल वकीला। करतसुभगहितनृपगणमीला॥
बभ्रूवाहन नृप दुःशाला। जीवनाथ आदिक महिपाला॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

करिकरिफौज साजि सबराजा । बिदामांगिगे सहित समाजा ॥
लै जनवास बिदा रानिन ह्वै । चले नृपतिसबश्रीशिवसुतह्वै ॥
करत बड़ाई धर्म्मज केरी । निजनिज धाम गये नृपफेरी ॥
इहां हस्तिपुर धर्मज राजा । नितनव मंगलमोद समाजा ॥
बहुत वर्ष बीते सुखदाई । आगे नृप सुनु कथा चलाई ॥
यकदिन कृष्णचन्द्र बलरामा । पुत्र पौत्र आदिक बर बामा ॥
आये धर्म्मराज के धामहिं । यथाउचितसबकीन्हप्रणामहिं॥
बास कीन्हश्रीप्रभु बलनागर । कुंतीभगिनिद्रुपदिमिलिआगर॥
यहिविधि बीतिगये कछुकाला । रहे कृष्ण गे हलधर बाला ॥

दो० कृष्णचन्द्र नारिन सकल बलसँग दीन्हपठाइ ।
आपुरहे हस्तिन नगर आनन्दित सुखपाइ ॥

यहिविधि कृष्णचन्द्र सुखदाई । रहे हस्तिना मास गँवाई ॥
यकदिन द्वै ब्राह्मण तहँ आये । तिन्हबोलायतिन्हबातजनाये॥
इनकी भूमि लीन्ह जोतनहित । जोततरहत सुनो हे नृपनित ॥
तामें मिलो सघन भंडारा । हमरोहक नहिं ताहि पुकारा ॥
सोहम धनहिं कृष्णनहिं लीजै । यादव पांडु न्याव करि दीजै ॥
हमसों अन्नदेव ते कामा । गड़ो मिलोसो याकर जामा ॥
यहसुनिबोलेउ द्विजबर दूसर । नहिं हमार धन उपजोऊसर ॥
हम सों वर्ष दण्ड सों रहै । और मिलै सो याकर अहै ॥
नाहीं होत अन्न जब याके । तबहूं लेत दण्ड हम साके ॥
उपजै जो करोरि धन भाई । तबहूं वहै मिलतहै राई ॥
उपजो जवन अवनि धनराजा । हमसों नहीं कछू है काजा ॥

दो० नृपबर सुनिद्विजबर बचन कृष्णपाहिं दैताहि ।
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हैं षष्ठमास निरवाहि ॥

षष्ठमास महँ तुम द्विज आयो । धर्मराय मुख न्याव करायो ॥
यहसुनिगेद्विजनिजनिजधामहिं।सभाबन्दिनितप्रतियहकामहिं॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

सुनु आगे नृपसुत अब कथा। मैं गुणगाइ कहत भइ यथा॥
इकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा। द्विजनबुलाइ दानबहुदीन्हा॥
ह्वैकै बिदा सुभद्रा पासहि। द्रुपदिहिमिलीबहुरिकैसादहि॥
मिलिनृप भीम पार्थसों भेंटत। मंत्रिहिनकुलहिमिलिसम्भेटत॥
कर्णपूत गांधारी मातहिं। तौपितुअंध और बहुजातहिं॥
मिलत सबनसों चालनकीन्हा। रथह्वै बेगिद्वारकहि चीन्हा॥
मिलत सबन यदुबंशिन आछे। गयेप्रथम मंदिर कहँ पाछे॥
इतनृप धर्मराज शुभकरई। चलै न मारग सत्य न टरई॥
बीते कछुक दिवस इमि ईछे। आयैं व्यास शिष्यसह पीछे॥
देखि नृपति बंधुन सहबन्दे। अश्वासनलखिव्यासअनन्दे॥
कहाव्यास सुनु धर्ममहीसो। कहेउ दास कारणसबहीसो॥
मम आगम तोहिंलागतफीको। जाते होउ दास नृपहीको॥
धर्मजसुनत बन्दि हँसिदीन्हों। कहेउ कृपातवसबसुखकीन्हों॥
शत्रुनमारि राज्य हम पावा। तव प्रसाद घोड़ाफिरिआवा॥

दो॰ अब कछु दिनसों महामुनि लखत अन्य उपकार।
मिथ्या वाक्य प्रमोदअति और सकल आकार॥

सो॰ ताहि समय सुनुतात करत बतकही व्याससों।
आयो द्विज बतरात बोलिन्याव लागेकरन॥

भाष्यो द्विज है भूमि हमारी। अन्न छांड़ि सब लेव करारी॥
याके हाथ भूमि क्रय नाहीं। करि करिया लेवैंहम आहीं॥
सुनि बोलेउ द्विज दूजो बानी। लेवै छीन कहत शिवआनी॥
याको भूमि बित्त सो चहिये। और मिलै मोको नृप अहिये॥
यहसुनिसबहिंनधिकधिकबोले। वृक्षहले धरणी सब डोले॥
डर सबके तिहुंपुर सब कांपे। जल समुद्र उछलै अरुतापै॥
धर्मज सुनत आंगुरी चापी। पवन चली बसुधासबकांपी॥

दो॰ सुनि धर्मज कंपन लगो भे प्रमुदित भूपाल।
रामकृष्ण कहिकै गिरे भेसचेत पुनिहाल॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

आधो अर्द्ध दीन्ह कै राजन। तबलागो पूंछन महराजन॥
अहोव्यास मुनिकारण कहिये। नहिंतोचित्त अनलसोदहिये॥
कह्योव्यास यह कलियुगलागो। धर्म धर्म नृपधर्महिं त्यागो॥
ताते आपु बद्रि पहँ जैये। गलिहेवारहरिआश्रमरहिये॥
कलिमें सकलगोत्र बधकरिहैं। पाप तिहारे ऊपर धरिहैं॥
कलियुग नगरहेतु हम भाखा। दोष झूंठ तव ऊपर राखा॥
ऐसे व्यास कहेउ बहु ज्ञाना। व्यासधर्म बिनजाको आना॥
व्यासगये निजआश्रम काहीं। कहेउ धर्म अब रहिबे नाहीं॥
चलोकृष्ण पहँ मांगि रजाई। तब उत्तरदिशि चाह्यो जाई॥
सुनिअर्जुनअतिशयसुखमाना। भीम नकुल मंत्री हर्षाना॥
बेगवंत अर्जुन रथ साजा। तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा॥
चारि बंधु भूपति सँगलीन्हे। हरिपुरओर गमननृपकीन्हे॥
चले अलौकिक देखत शोभा। जितहिंजाततितहींमनलोभा॥
कतहूं शिक्षित पंडित बालक। कतहूंजात सैनरिपुशालक॥
कहूंलरत गज अतिहिततारे। उज्ज्वलगिरि समानभैभारे॥
माल महिष उष्ट्रादिक नाना। लड़त शब्द फाटततेकाना॥
कहत धनुर्विद सूरति छीजत। पुरबाहर ह्वै कोउकोउईछत॥
कोउ नृत नाटक करतरिझावत। बारमुखी नाचैं गुण गावत॥
मालीगण सींचत कहुँ बागन। मधुकरकाम अंधसहरागन॥
कहुं कहुं होत युद्ध के साजा। आवत नृपन पत्र जहँराजा॥

सो० कोकवि करै बखान जहां रहैं श्रीब्रह्मप्रभु।
असकोत्रिभुवनआनजोनभजतश्रीप्रभुअसहि॥

कहुं विवाह चूड़ाकरनादी। गावत मंगलचार सदादी॥
सर अरु बाग नदीतट पावन। भर्मत नारी काम लजावन॥

दो० कोकिलपिकअरुमोरगणसुमनसहितऋतुराज।
रहतसदा हरिकीकृपा होनितप्रति यहकाज॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

दो० यहिबिधि लखत सबंधु नृप करत मिलनसबपास।
रामकृष्णकहि मिलतसब कुशल कहत हमदास॥
कहेउकृष्ण नृपकहु केहिकाजा। आये सकल बंधु महराजा॥
व्यासबचन अरु न्यावबतायो। कलियुग घोरपापमयआयो॥
जानचहत उत्तरदिशि प्रभुहम। कीन्हगोत्रबध हमनाहींकम॥
जो आज्ञा आगे प्रभु केरी। हम तो पलक कोर प्रभुहेरी॥
भाष्यो कृष्ण सुनौ हे राजन। कलियुगअहैघोरयहिकाजन॥
तुम्हैं गोत्र बध पाप न ह्वै है। पुनिकलियुगबासीनहिंछुइहै॥
कहिहैं धर्म्मराज जो कीन्हा। पाप पुण्य उनहूंनहिं चीन्हा॥
सो० व्यासकहेउयहिहेत कलिबासी जोजनकरत।
दोष तुम्हैं जो देत पापलहै तुव सोइ सुनो॥
कलियुग ऐहै घोर अपारा। तामें चलै न कछुक अचारा॥
बृद्ध स्यान मम भुगिहैं राई। मानहिं मातु पिता नहिंगाई॥
यौवन मदबश करहिं कुकर्मा। तजिहैं देश लोक कुलशर्मा॥
ब्राह्मण जोतहिं हल तजिपुंजा। जोतजिदिवसकरहिंनिशिपूजा॥
वीर्य्य हीन क्षत्री ह्वै जैहैं। तबहीं म्लेच्छ नृपति ह्वैऐहैं॥
बैश्य देव द्विज सेवा हीना। कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीन्हा॥
क्षत्री भूमि हीन ह्वै जैहैं। बूझोनृप कब कलियुग ऐहैं॥
दो० भाद्र मास पक्षकृष्णजो त्रयोदशी रविवार।
अबते बाकी मासषट कलियुगकर अवतार॥
जब कलियुग गंगाकहँ जाना। तबह्वैहैं अतिअवगुणनाना॥
नारि धर्म्म जो बिधवा करिहैं। कन्या गर्भ कुमारहि धरिहैं॥
कहँलौं कहौं प्रभाव भुवाला। संकर वर्ण होइ कलिकाला॥
कछुदिन करहु राज्य नृपआछे। हमसहचलबकछुक दिनपाछे॥
अब तुम नगर जाइयो राजन। प्रथमैंकहेउकिहेउजबसाजन॥
दो० सुनि नृप प्रभुके बचन वर मिले सबहिं भूपाल।

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

अर्जुन रहिंगे द्वारकहि आगे सब जन हाल ॥

नगर आइ भूपाल सुहाये । पौत्रहिं बोलि सुकंठ लगाये ॥
माता को सब बात जनाई । कृपाचार्य्य सुनतै दुख पाई ॥
धीरज धरि कुन्ती यह भाखा । पतिसँगगमनमोहिंबिधिराखा ॥
पुत्र बिना कस रहिहौं राई । जावाचहत सुतहि तुमहाई ॥
कलियुग केर प्रभाव बतावा । तबकछुहृदयज्ञान भरिआवा ॥
कलियुगपुत्रजो पियअबआयो । तातेमान मोहिं नहिं भायो ॥
हम सबको तिलअंजलि दीजै । उत्तर पंथ गमन तब कीजै ॥

दो० चलन कृष्ण आपहु कहे तबलग माताजाय ।
आये अर्जुन तेहि समय गये मातु लगधाय ॥

कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी । अर्जुन कही कथा जस हेरी ॥
कहेउ कृष्ण नृपरहोकछुकदिन । सुनिनृपभयेप्रशंसतछिनछिन ॥
द्वै कारज अब ह्वै हैं पारथ । मातुजाबयहसबविधिस्वारथ ॥
सन्ध्या भई सबन शुभ कीन्हा । भोर अन्हाय दानसबदीन्हा ॥
क्रिया कराई सुबिर सुहाये । गयेहुते बहु दिन अब आये ॥
ताही समय आगमन कीन्हा । पुरजनसहितनृपतिबरचीन्हा ॥
बंदि चरण सब जन तब ईछे । चरण धोइ आसनपर पीछे ॥

दो० कुन्तीद्रुपदी भगिनि प्रभु तुवपितु मातुसबंदि ।
आशिषदीन्हों मुदितमन श्रीबर बिदुरअनंदि ॥

संध्या देखि क्रिया नित कीन्हे । भोजनकीन्ह सबनमुदलीन्हे ॥
ताहि समय नृप बंधु सयाना । बिदुरहि कहेउपोढ़िये आना ॥
करहु तात अब तुम बिश्रामा । यहसुनिकहेउबिदुरनिजकामा ॥
बिदुरकहे भूपति सो बोले । चाहत मिलन भ्रातमनडोले ॥
आज्ञा दियो धर्म के राजन । बिदुरचले मिलिबेके काजन ॥

दो० किंकरजन लैगे बिदुर चरण गहेउ कहि नाम ।
सुनतनाम नृप उठिमिले सह संजयअभिराम ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

सो॰ विदुर मिले सह नारि बार बार धीरज कहत ।
दीन्हेउ जो मुख चारि ताकी प्रभुता है महत ॥

हाहा विदुर कहत भूपाला । असकहिदम्पतिठोंकतभाला ॥
हाय बिदुर ममसुत सब जूझे । अजहुँक्षुद्रतनप्राण असूझे ॥
नात गोत्रजन सों भयों हीना । पुत्र हीन हम अबहूं चीन्हा ॥
मरत न फूटत हियो है भाई । मम समभयो न होने आई ॥
अस कहि दम्पति रोवनलागे । असमुनिजनमेजयनृपआगे ॥
धीरज दियो बिबिध परकारा । दियो ज्ञान भू एक अकारा ॥
तव बोले नृप अंध सुजाना । कहँ कहँ गये बन्धुइतआना ॥
इतते गये सुनहु नरपाला । रहे उजयनि जहां महकाला ॥
चर्मवती अरु तीर्थ अनेका । सोमनाथबसिभयो अशोका ॥
गंगाद्वार बास तब कीन्हा । आय नैमिषारण्यहिं लीन्हा ॥
बाराणसी तहां ते आये । बिश्वेश्वर के दर्शन पाये ॥
गये हिमालय कहँ भूपाला । अलकापुरीलख्योसुखशाला ॥
व्यासाश्रम दश बर्ष बिताये । तहँ ते चित्रकूट कहँ आये ॥
यह सत्संग ऋषिन कर लीन्हा । ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा ॥
तहँ ते गये बड़े सो देशहि । भुवनेश्वरकिये दर्श विशेषहि ॥
रामनाथ कर दरश सुहाये । तात तहां ते इतको आये ॥
लहि मैत्रेयपास कछुशुभगति । तुमहिंदेखिबे आयगये सति ॥
तव सुधि बिसरतिहुती न नेको । देखत तुमहिं सुखी नहिंएको ॥
चलौ भ्रात तप हेतु महाबन । जहँथलअहै व्यासकरपावन ॥
सुनुनृप दुख न मानिये एको । सोइहरिबिनुजगमाहिंनएको ॥
सोई जल सोई थल जानो । सर्गुन निर्गुन तैसेहि मानो ॥
सोई पृथ्वी सोइ अकासा । आपुइ स्वामी आपुइ दासा ॥
आपुहि राजा आपुहि रानी । सोई अग्नि सोई है पानी ॥
सोई धन सोइ चोर कराला । सोई मरत सोई है काला ॥
सोइ है हीन सोई है पावन । सोइ है राम सोई है रावन ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

हरि आपुइ नर आपुइ नारी। आपुगृहस्थ आपुब्रह्मचारी॥
आपुहि पिता आपुही माता। आपुहि पुत्र आपुही भ्राता॥
आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी। आपुहि महिष आपुहीसानी॥
आपुहि ग्वाल आपुही गाई। आपुहि आपु चरावन जाई॥
आपुहि भँवर आपुही फूला। आपुहि ज्ञान बिनाजन भूला॥
राज रंक दूजो नहिं कोई। आपुइ आपु निरंजन होई॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका। तैसे जानै ब्रह्म विवेका॥
यहि प्रकार जाको मन लागै। जरा मरण नाशै भ्रम भागै॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै। ब्रह्मानंद सुनहि तब पावै॥
सोइ बैकुंठ सोई है नरका। सोइ है शोक सोई है हरषा॥

दो० मातु सोई पितु सुत सोई सोई नृपति सोइ रंक।
एकरूप जानो सुखद नृप मति करियो शंक॥

बोले बिदुर सुनहु हे राजा। दुखबशदेखिपरतकेहिकाजा॥
कहा अंध नृप सुनिहे भाई। भीम बचन मोहिं सहो न जाई॥

सो० और सकल सुखदेत भीम कहत मोहिं कटुबचन।
सो न सहब मनलेत कोभाषै हरिकी रचन॥

बिदुरजाहिजिमिनृपकटुभाषत। श्वानसमाननृपतितुवमाषत॥
जैसे लकुट हनत कोइ ईछे। टूक देखाय बुलावत पीछे॥
तस तुवदशा करत नरनायक। भीम कहत नृपसे तुवलायक॥
खात शूद्रगृह लाज न आवत। हीन बंश अजहूं होरावत॥
तातै करौ चलो तप जाई। नातरु लहौ अधिक दुखभाई॥
सुनि कटु बैन तपहिं कहँ ईछे। बिदुर सुनाय ज्ञानसह पीछे॥
सुनो बंधु जगकर ब्यवहारा। जामें बँधो सकल संसारा॥
सुखदुख स्वप्न जानियोराजा। यकइतिहास कहततवकाजा॥
दो० एकवणिक लै बहुत धन चल्यो करन रुजिगार।

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

एक दिवस बनमों परा सूर्य अस्तकी ब्यार॥

तहँ षट चोर मिले हे राजन। लूटन संगचले तेहि काजन॥
बहुतचलो तबबणिक अजानो। बसनहेत नहिंनगर निरानो॥
अधिकअधिकबनचलतपरतजस। पकेतालयकरहो बैठितस॥
तहँ षट आकर चोरन लागे। बणिक देखिभयबशतबभागे॥
बनमहँ परो भुलायबणिकजब। देख्योतबचरित्रनृपसब अब॥
कहूं देखि भाजत गज भारी। कहूं सिंह कहुँ सर्प करारी॥
दावा देखि जात भय भागत। गिरत परतउठि कांटालागत॥

दो॰ यहि बिधिते ब्याकुलभयो गिस्यो अँधेरे कूप।
बैशंपायन मुनिकहेउ सुनु जनमेजय भूप॥

बटको बृक्ष हेठ पर राजत। पकरिबणिकडालीकहँताजत॥
जो शाखा लटको मधि कूपहि। ताहि रहे देखत हे भूपहि॥
मूष श्याम उज्ज्वल द्वउराजत। शाखा काटिरहे पुनि गाजत॥
पकरिचहतसोइ हेठहि आवन। हालतडार गिरत मधुपावन॥
मुखमधिगिरतचाटिसुखपावत। कूपहि सर्पदेखि भय लावत॥
शाखा गिरे सर्प दुख लीन्हों। ऐसहिदशासबहिं प्रभुकीन्हों॥
बोले तब नृप बचन सुहाये। कौनत बन अब देहु बताये॥
बोले बिदुर सुनहु हे भाई। जीवहिबणिक जानि जोआई॥
कामक्रोध अरुमोह लोभ मन। इन्द्रिय यहजानौतसकरजन॥
अरु पुत्रादि सकल परिवारा। पाइ सहायक चोर अपारा॥
जाते कहत बनाय जीवको। उत धन धर्म अधर्म हीवको॥
जिमिब्याघ्रादिडरावतबणिकहि। तिमिकुलचोरडरावतजनिकहि
बन है दुःख जौन संसारा। स्त्री आदि कूप है कारा॥
है आयू वह शाखा जौन। द्रब्य अहै तौ बहता पौन॥
मूषक राति दिवस करिजानो। काल सर्प को नृपकरि मानो॥
कह संजय जोबिदुर बखानत। हमहूंकहत जाहुअस जानत॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

दो॰ इंद्री हैं अरमन बहक देह सुरथ रथवान ।
याके बश भर्मत फिरत जीवन कछु है आन ॥
सो॰ कह संजय मतिमान रूपहि देखा साधुको ।
ताबिनकछुनहिंआन जड़ चेतन उत्पन्निसत ॥
दो॰ भई व्यतीत सुरैनि तब भयो ज्ञानको भोर ।
धर्म नृपति आवत भयो बंदत पितुहितओर ॥

नृपति भीम अर्जुन तब बंदे । नकुल देव सहदेव अनंदे ॥
नाम कहेउ तब पांडव चीन्हो । गदगदह्वैदम्पतिशिषदीन्हो ॥
कृपाचार्य्यमिलिबिदुरहिभेटत । संजय मिलो तापत्रय मेटत ॥
मिलि युयुत्सु आदिक बहुतेरे । औरौ सकल बसैया नेरे ॥
कर्णपुत्र नृपहृदय लगायो । मेघवर्ण मिलि दुसहनशायो ॥
बैठे निजनिज आसनपर सब । अंधनृपति गदगद बोले तब ॥
होहो पुत्र धर्म सुखदाता । कियप्रतिपालमोरअरुमाता ॥
दुर्योधन आदिक सब जूझे । तबसों तुम मोको अति बूझे ॥
बिसरो दुख पुत्रन बध मोहीं । रोमाहिं रोम अशीशत तोहीं ॥
मम सुत तुमहिं दुःखबहुदीन्हो । फल पायो ते आपन कीन्हो ॥
अब ममदेह सकल जर जरसे । बलमुहीन सब निकरिगईसे ॥
सरिता हेठ वृक्ष मोहिं जानो । वृक्ष उखरिबो शंक न मानो ॥

दो॰ आज्ञा दीजे जाइँ हम दम्पति भ्राता साथ ।
कर्ममुक्तिहित बनै कछु उतहित धन जोहाथ ॥

नृपसुनियहबंधुनसहदुखअति । बोलतभे तब ज्ञानचक्षुपति ॥
हमरे तुम सबके सुखदाता । केहिबिधिकहौंजाहुअसबाता ॥
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू । होय सुभग सह मंगलसेतू ॥
तब कुंती बोली बिलखाई । हमहूं चलब संग तुव राई ॥
सुनतै सब काहुन समुझावा । कुंतीके मन नेकु न आवा ॥
तब धृतराष्ट्र कहन असलागे । धर्मराज राजा के आगे ॥
पुत्र मात सम्बंधी जोई । जानाहै औरौ सुन सोई ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

पिण्डा श्राद्ध सबन की करिकै । भोरजाब पुनि सबन्नतधरिकै ॥

सो० सुनि धर्मज गुणऐन बंदि सबनि पितु पदपदुम ।
आये निज निज ऐन नित्यक्रिया भोजन कियो ॥

नृप ह्वै शुचि सहदेव बुलाये । तिन नृपआयसुसुखदसुनाये ॥
लै बन सबन बस्त्र पट नाना । गजरथ बाजी उष्ट्र बिताना ॥
अरु भोजन के साज अथोरा । लै मति दृगपहँ जाहु करोरा ॥
यह सुनि किङ्कर सकल बुलाये । जो जेहिलायक ताहि सुनाये ॥
निकरत मुखबानी किङ्कर जन । लैसबगयेमिलोअतिअरुबन ॥
लादिसाज नृपमन्दिरमों सब । होनलागतब साजसकलतब ॥

दो० निशा भयो पुनि बित्तमो गये धर्म के राज ।
पितहिं बन्दिलगेकरन सबजनसबविधिसाज ॥

होम भयो पिण्डा नृप दीन्हा । जसविधिवेदकहेउतसकीन्हा ॥
भोजन श्राद्ध यथाविधि कीन्हों । दान अथोर विप्र नृपदीन्हों ॥
याचक सकल अयाचक भये । यकदिन एकनिशा इमिगये ॥
अरुणोदय लखिचालनकीन्हा । दानदयासों ब्राह्मण दीन्हा ॥
आशिषदै निज धामन आयो । जन्मेजयसुनिमुनि सबगायो ॥

दो० कुन्ती मिलि गन्धारिता बिदुरसहित मिलिधर्म ।
सबन मिलत आगे चले पुरजनसह जिमिसर्म ॥
पुरजनमहँ सुरराजसम नृप धर्मज सह भाय ।
नारी नर सब बिकल ह्वै हा हा हा कहिराय ॥

नृप धृतराष्ट्र सबनसमुझावा । मिलिसबहिनयोजनयकआवा ॥
धर्मराजकहँ आशिष दीन्हा । संजयकहँ प्रबोध तब कीन्हा ॥
सब काहुन पलटायो राजा । गाङ्गेय मिले अर्द्ध महराजा ॥
मायामोह तोरि तृणइव सब । आगे चले सुनहु नृपवर अब ॥
बिदुर कंधधरि कर नरपाला । पति कंधा गंधारी बाला ॥
तापाछे कुन्ती धरि हाथा । चले नवाय गङ्गकहँ माथा ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

करि मज्जन अरु बहुकर दाना । चले बनहिं चारिउजनभाना ॥
यहिविधि करत बासमगमाहीं । चले जात नितभयदुखनाहीं ॥
ब्यासाश्रममिलिसबमुनिजूहन । भे प्रसन्न भोजन फलमूहन ॥
ब्यासहिंमिलत अधिकसुखपावा।कहमुनिभलीकीन्ह जो आवा ॥
जैमुनि शुकदेव बकादलम्भी । औरोमिलेमुदितमुनितम्भी ॥
कह नृप लहेउ दुःख मैं ताता । सुतजूझनआदिक बहुबाता ॥
कहमुनि प्रथम तुम्हैं समुझावा । नेकु हृदयमहँ ज्ञान न आवा ॥

दो० निज तन तूल भराइकै निजकर अग्निलगाय ।
दोष देय तब ईशको कह्यो ऋषै समुझाय ॥
सो० ताते करु तप भूप हृदय राखि अव्यक्त प्रभु ।
देखि चराचर रूप जो त्रिभुवनमहँ एक प्रभु ॥

करन लगे तब नृपहो रानी । बिदुरआनिकरिज्ञानसुहानी ॥
भे अद्भुत सदृश यमराजा । मग्नफिरतबन और न काजा ॥
उत नृप धर्मराज दुख पावत । लख्योतबैऋषिनारदआवत ॥
उठे सभासद मुनि कहँ बंदे । लख्योधर्म्मनृप बहुत अनंदे ॥
अर्घ देइ आसन बैठारयो ।मुनिसमीपअसबचनउचारयो॥
त्रिकालज्ञ सर्बज्ञ मुनीशा । फिरतरहत तुमसदा अहीशा ॥

दो० तुम मुनीश सर्वज्ञ प्रभु जानत मन भगवान ।
कहो खबरि कछु बिदुरकी सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआश्रमवा-
सिपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

बिदुर बिरक्त फिरत बनमाहीं । त्यागो तन गे हरिपुर काहीं ॥
तौ पितु और दोउ पटरानी । गईं अग्निजरिसुनुगुणखानी ॥
भये बिकलसुनि बन्धुनृपाला । जोगतिहोतबिकलजिमिकाला ॥
रोवत बार बार हाहा कहि । मूर्च्छित ह्वैकै गिरत अहैंमहि ॥
यह देखत बोले मुनि नारद । सुनुनृपवर बिज्ञान बिशारद ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

मरण भयो न कछू यह जाना । समुझनहेतु कहेउ असराना ॥
हे पितु भक्त सदृश कोइ नाहीं । परपितुमानतसमपितुआहीं ॥
अबचलि दरश करौ पितु केरा । नातरु काल आयगो नेरा ॥

दो० यह कहिकै नारद ऋषै चले ब्रह्मपुर ओर ।
अब आगे सुनु नृप कथा श्रोतनके शिरमोर ॥

तुरत तयार नृपति बरभये । बंधुसहितनृप मिलिअबगये ॥
पति औ नारी सकल समाजा । नगरमहाजनअरु द्विजराजा ॥
चले सकल जेहि राजत पुरमों । बाण सदृश यहलागतउरमों ॥

सो० चलेनृपाल भुआल सहितबंधु पुरजन सकल ।
ठौर ठौर रक्षपाल राखि चले हस्तीनगर ॥

नृप तब नगर राखि रक्षकगन । चलेसबनसहदुखितनृपतिबन ॥
तीरथ करत बास भगवाना । चले बनहिंजहँ कुरुपतिराना ॥
गये व्यास आश्रम के पासा । भे पद त्रान बिहीन सुदासा ॥
मिलतऋषिनकहँबिबिधबिधाना । गये जहां हैं व्याससुजाना ॥
मिलेव्यासकहँ बंदनकरि करि । बारबारशिरपद महँधरिधरि ॥
दै अशीश नृप कहँ मुनिराया । कृपा कटाक्ष सबनपर दाया ॥
मिले पिता द्वौ मातन काहीं । नाम सुनाइ कहेउ कछुनाहीं ॥
सकल मोहबश जल नैननमहँ । को असकहै दशा नृपभेतहँ ॥

दो० दै अशीश सब कहँ सबन बैठे सब जनराय ।
वैशम्पायन कहत हैं जन्मेजय पहँ गाय ॥

दुर्लभ देखि राय कहँ राजा । सहमतुनहिं दुर्बल तपकाजा ॥
बोले नृपबर गदगद बानी । कहँहैं बिदुर कहेउ तबरानी ॥
कुंती कहभे परमहंस वै । ढूंढ़न चले अकेल बनै स्वै ॥
देख्यों भागिजात बनमाहीं । गोहरायो ठिठुके त्यहि नाहीं ॥
तदपि वृक्षआश्रितचीन्हों जब । नयननीर भरिरहेउठाढ़े तब ॥
चरण गहेउ धर्मजके राजा । ताहिसमय दुंदुभि बरबाजा ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

बिदुर त्याग तनु ताही औसर । गे यमराज बिदुर कैबर ॥
देखि धर्म नृप बंधु बोलाये । कहिसबकथा नयनजलछाये ॥
दाहन चहेउ तबै बाणीभय । जीवनमुक्तिबिदुरयमकहहय ॥
दो० यमराजा को अंग है बिदुर भक्त भगवान ।
धर्मराजहियसुमतिभो परबोधिकसुनिकान ॥
सो० आयो राजा धर्म कहेउ कथा सब बिदुरकी ।
कीन्हों बिधिवत कर्म निजकर राजाअंधबर ॥
रहेबनहिं कछुदिन शुभबीतत । महादुःखलखिमुनिवरचीतत ॥
पूछेउ सबसों को केहि चाहत । जासों होत उऋणमों दाहत ॥
कुंती कहेउ कर्ण मैं देख्यो । गंधारी जामात्रहि लेख्यो ॥
सुभद्राआदिक सुतकहँभागत । पितुसुतबंधुपतिहिशरणागत ॥
सबै कौशिकी तट लै गयऊ । तपप्रभाव सब आवत भयऊ ॥
दिब्य दृष्टि अंधहि नारी सह । सुनत लगायो कह हाहातह ॥
कोउपति मिलत महामुद छाये । कोउकोउ पुत्रन हृदयलगाये ॥
कोऊ भाई बापहि लावत । दुखमिटिगेकोउमंगलगावत ॥
रैनि एक सुखसे सब बीतत । अरुणोदयलखिसबजनचीतत ॥
फांदे सब बन नृप छल माहीं । रहे न एकौ धौं कोउ माहीं ॥
सकल मोहबश नारि अपारा । धसीं जलै करि घोरचिकारा ॥
कोउकोउ बनमहँढूंढ़त भागत । कोउकोउप्राणतजतभैलागत ॥
कोउकोउब्याघ्रादिकधरिखायो । जलमहँधसिसबप्राणगँवायो ॥
कोउकोउशून्यहोम मखशाला । जरीं अग्निमहँ जे बरबाला ॥
दो० सब काहुन तन त्यागिकरि गईं पतिनके साथ ।
ब्यासकहेउ यहधर्मसों अबभल तबहिं अनाथ ॥
सो० आये सुनि नरपाल जहां होमशाला नृपति ।
सुनु अब कछु सुतहाल वैशम्पायन कहतभे ॥
धर्मनृपति मख करत रहे तहँ । मखशालारह ब्यासकेरजहँ ॥
अग्नि प्रचंडशिखा अतिबादी । अर्द्ध नृपति अंगहि तहँडादी ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

कुंती चलन चहेउ उठि तहँते। अक्षविहीन नृपतिवर जहँते॥
धर्म बिचारि जरी सँग तिनके। रामकृष्णकहिकहि वै जिनके॥
कोऊ ऋषि अरु पाण्डुकुमारा। रहे न तब कोउ उठवनहारा॥
आय नृपति यह दशा निरेखी। कीन्हों रुदन सुनत जिनदेखी॥
रोयउठे सहनृप बन्धुन जन। और नगर बासी आये बन॥
रोवहिं कुंतिहि गन्धारी कह। हायहाय कहि अंधनृपतिसह॥
लैकर अस्थि सुदंपति केरी। लीन्हे अस्थि ढूंढ़िमा केरी॥
कीन्हे कर्म सबिधि गंगातट। जहँ पवित्रबन मोहिं एकबट॥
कीन्हतिलंजलिदेयसबिधिबिधि। चलेधीरधरिनगरनृपतिसिधि॥
करि बंदनऋषिब्यासबनको। चलेमगहिंमहँश्रमनहिंमनको॥

दो० बास चलनकरि मगनसब नृपराजन सहभाय।
नारीसंग सुभद्र सह द्रुपदी सह दुख पाय॥

सो० आयेनगर नृपाल दिये तिलांजलिदिवसनिशि।
एकादश सुखपाल दिये बाजि नारी सबन॥

दो० द्वादशयें दिन भूपमणि दीन्हों दान अथोर।
बासलसो दम्पति तबै सहकुन्ती सबओर॥

पायोबास सुखद सब काहू। मिटेउ दुःख प्रबलित जो राहू॥
धर्मराज जो बिदुर कहायो। निजपुरबास न्यावमन लायो॥
जनमेजय सुनि भाषन लागे। सम्पुट जोरि मुनीशन आगे॥
नाथ कहौ यम केहि अपराधू। भये मनुज गुणवर अरुसाधू॥
बोले मुनि राजा के आगे। गदगद बचन रावके पागे॥
एक मण्डपी ऋषी सोहावन। करतहु तप्त पवनमधि पावन॥
बहु तसकर चोरी कर लाये। तहँ बन मध्य मोर करि पाये॥
तहँ बन डारि सकल तब भागे। उननृप आपु उदयलखिजागे॥
धन बिहीन लखि रक्षक डाटे। तिनके चोप रह्यो नहिंकाटे॥
चरण चिह्न देखत ते दौरे। धन देख्यो देख्यो मुनिबौरे॥
धन लदाइ मुनि बूझन लागे। अरेचोर क्रोधहि अतिपागे॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

धरे मौनव्रत मुनि नहिं बोले। धनसहायकरि गयो नृपतौले॥
नृप देखत अति क्रोधहिपागे। कहिकटुबचनकहनअसलागे॥
सूजी देहु चढ़ाय सुचोरहि। दिंयचढ़ाइतबमुनिवरऔरहि॥
दो० सूजीपर बैठे ऋषै धरे तत्त्व को ध्यान।
कष्ट पाय सब ऋषि तबै आये ऋषिके धान॥
सो० खगमृग रूपनधारि आये मुनि बूझन लग्यो।
पापकौन असचारि जो ऋषिवर अतिकष्टहो॥
दो० हरिइच्छा असकहिदयो सबसों मुनिवर गौन।
राय सुनत दीन्हों छुटै आयो यम के भौन॥
हे यमराज कहो केहि पापन। लह्योघोरदुख सुनुसोइदापन॥
कह यमराज सुनो मुनिराजा। लह्योकष्टअतिसुनुसोइकाजा॥
है पतंग गुद बाली कीन्हों। तेहिकारण इतनो दुखलीन्हों॥
यहसुनि क्रोधितह्वै ऋषिबोले। अग्निशिखामुखअग्निहिबोले॥
शूद्रसदृशतुव प्रकृति जनावत। शूद्रयोनिजन्मज तुम पावत॥
सुनियमराज चरणगहिलीन्हों। ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों॥
ह्वैहे शूद्र मुख भाषन कीन्हों। हरिके भक्त और सिखदीन्हों॥
पुनि यमराज होइ हौ आई। आयेमुनि कहि अतिसुखपाई॥
बिदुर व्यास तप बल ते राई। भैहैं शूद्र प्रथम मैं गाई॥
बोले जनमेजय भूपाला। व्यासरच्यो नरवश सबबाला॥
बनमहँ देहत्यागि तिन्हकीन्हों। मायातप यह चाहत चीन्हों॥
बोलेमुनि तपबल ऋषिव्यासा। कीन्ह देखु अमरावति बासा॥
मैं जानी नृप तुव मन ईच्छित। ताते आवत पिता परीक्षित॥
ताहि समय नभगहगह बाजत। आवतदेखिबिमानहिगाजत॥
किन्नर देव नृपति सँग आवत। बाजत बेणु अप्सरा गावत॥
नौल नारि नलनी कच राजत। कुचयुग भरतफूलमकुबाजत॥
दो० चमकत मोतिनजोरिमुख हँसत फँसत चितदून।
लाजत देखत जाहि रति मति न रहत शुभजून॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

सो० यहि बिधि सुभग सुजान आयो रथ बगमेलमें।
मिले पतिहि दै यान बार बार बन्दत उदित॥
मिलें देव किन्नर सब राजा। बाजे हरि तन आनँद बाजा॥
मिले परीक्षितकहँ सबनृपगण। नातगोत्रसुतसहपुरजनजन॥
तब जनमेजय द्विजन बोलाये। आशिष पाय प्रसन्न जनाये॥
देव सकल पितु सह उठि ईछे। मज्जन करवायो सब पीछे॥
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो। ब्रह्मदेव सब रसन जेंवायो॥
सिंहासन पर पूजा कीन्हों। चरणधोय चरणामृत लीन्हों॥
सुभग सुगंधित माला दीन्हों। शय्यादै आश्वासन कीन्हों॥
तबपश्चिमलखिअस्तदिवाकर। द्विजभूपन मिलिमिलेपुत्रवर॥
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे। चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहँबन्दे॥
दो० बाजै किंकिणि चारु ध्वनि नाचन लागींनारि।
जाइ पहूँच्यो इन्द्र पुर तनक न लागींबार॥
तब जनमेजय भूपबर मुनि अस्तुतिअनुरागि।
सूत शौनकादिककहत निशाबीति सबजागि॥
अरुणचूड़ अरुणोदयलागत। श्रोताबक्ता सब जनजागत॥
मज्जनकरि आसन प्रति आये। जनमेजय इमि अर्जसुनाये॥
कहो तात सब कथा सुहावन। पापनशनि सम्पुण्यबढ़ावन॥
शत्रुनशनि मित्रनिसुखदानी। कलिनाशनिमुनिमहजिमिबानी॥
कल्पलता कलपाय सुतासी। कुंदकली उचलित कुंदासी॥
जीवनसी जीवात्मा ईशी। परमतत्त्व परतत्त्व तमीशी॥
दो० जीवन धनसी ईशसी पीससदृश गुणदाय।
सो अब भाष्योमहामुनि कलिजन पापनशाय॥
सो० मुनिवर भाष्यो बैन राजासुनु धरि ध्यान यह।
सबसुखको जोऐनपढ़तसुनत सुखनवल नित॥
यकदिन राजाधर्म भोर उठे श्रीकृष्ण कहि।
कीन्हों नितकृतकर्म बन्धुनसह राजित सभा॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

ताहिसमय कलियुगसुधिआई। देह दशा धर्मज दुख पाई॥
कह पारथ हरिपुर अब जैये। उत्तर चलौ कृष्ण पहँ लैये॥
मातुपिता के हित इत रहेऊ। ते सबगाय सबिधि ते कहेऊ॥
अब रहिबो नहिं उचितसुभाई। ताते लावहु श्रीहरि जाई॥
अर्जुनसुनत सुभग रथसाजा। भीमहिं मिलेसबहिंपुनिराजा॥
दो॰ बेगवन्त अर्जुन चले जहां बसत भगवान।
आश्रमवासिकपर्व्व कहि सबलसिंहचौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआश्रम
वासिकपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

मुशलपर्व ॥

दो॰ श्रीगिरिजागणपतिसुमिरि वरणिभक्ति हनुमान।
मूशल को भाषा रचत सबलसिंह चौहान ॥
जनमेजय मुनिसों जवन भाष्यो सुनि शुभगाथ।
ताहि सुभग भाषारचत धरिशिर निजप्रभुपाथ ॥

बन्दौं गुरु गोविंद के पायन। जिन प्रसाद ह्वजै सुखदायन ॥
सुमिरौं अवधनाथ सीतापति। नारद शारद सुमिरिमहामति॥
सुमिरौंआदिकाव्यघटव्यासहि।जाकीसविधिभांतिमोहिंआशहि
ईश्वर रूप जानि जगती को। सुमिरौंराम आदि शिवनीको ॥
सम्बत सहस्र सै शुभ तीशा। भाद्रमास सप्तमि रजनीशा ॥
औरँगशाह दिलीपति नायक। सबलसिंहतब हरिगुणगायक॥
वैशम्पायन कहत सुनाई। सुनहुसार्थ कुलवर नृपराई ॥
जब धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी। गे हरिपुर सह कुन्ती रानी ॥

दो॰ इत अर्जुन गे द्वारकहि कुशल हेत सुखपाय।
मार्ग मिले नारद सुमुनि रथमों लिये चढ़ाय ॥

बिबिधभांति भाषतशुभगाथा। जातचले अर्जुन मुनिसाथा ॥
पहुँचे निकट द्वारका ग्रामा। मिले अमृतही श्री बलरामा ॥
अनिरुधसाम्बप्रद्युम्नसुआदी। औरौ चले देखि मिलनादी ॥
देखि पार्थ नारद मुनि राई। उतरे रथ सुमिलनहित धाई ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

यदुबंशिन प्रणाम तब कीन्हो। नारदमुनि आशिषतबदीन्हो ॥
पग बन्दे पारथ हलधर के। हिये लगाय कहतहौं नीके ॥
जेते कृष्ण पुत्र अरु नाती। बन्दे चरण मिले सब जाती ॥
कुशल प्रश्न इत उत सब पूछे। मिले सात्विकादिक छलछूछे ॥
यहिबिधि मिलत पार्थसुनिराम। राजहिं मिलिगे जहँसुखधाम ॥
सम बन्दे तहँ मुनिवर ईछे। अर्जुन कृष्ण मिले तहँ पीछे ॥
अर्घपाद मुनिवर कहँ दीन्हा। विधिवतपूजिसुआशिषलीन्हा ॥
लै अन्तःपुर गे मुनि पारथ। मिलेपार्थ सबत्रियनयथारथ ॥
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा। मनभावतआशिषशुभलीन्हा ॥
पटरानिन सेवा मन दीन्हो। पार्थ कृष्ण मुनिभोजनकीन्हो ॥

दो० भोजन करि बीरा लयो सुभग सुगन्धित लेप।
तब सोये बर पार्थ भट बूड़ेउ नारद सोपि ॥

सो० आगम कहौ मुनीश केहि कारण आवन भयो।
कहेउ नारद सुनि ईश ब्रह्मा पठयो आपुपहँ ॥

मानुषउमिरि अधिकह्वै गयऊ। अजहुँन आवनहरिकरभयऊ ॥
प्रभुडर कालडरत नहिंआवत। यदुकुलकतहुँजीवनहिंजावत ॥
तव प्रसाद पितु मातु तुम्हारे। उग्रसेन आदिक ज्येठारे ॥
तेऊ मरत न सुनहु कृपाला। ब्रह्मा है यहि हेत बिहाला ॥
कहति सृष्टि नइनीति चलाई। केहिकारण मोहिं ईश बनाई ॥
चतुर्मुखा केहि कारण भाषत। देवन में सरिता करि राखत ॥
हौं पुनि उनहीं केर बनावा। अंतखोज प्रभु हमहुँ न पावा ॥
तौ निजकर क्योंनाहिं बनावत। हमरे ऊपर दोष धरावत ॥
व्रज मों गाय गोप उन कीन्हो। तब प्रथमै हम परचोलीन्हो ॥
ताते अब यहउचित न तुमको। हँसवनउचित प्रभूहै हमको ॥
ताते कृपा करहु बनवारी। पाहिपाहि मैं शरण तुम्हारी ॥
औरौ कही बात करजोरी। कहँलौं कहौं अनुग्रह तोरी ॥
हँसिकह प्रभु भो घोर नेवारा। तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

कह मुनि भार अथोर अपारा । यदुकुल मरिहिनकाहुहिमारा ॥
करिय नाथ अब कछुक उपाई । जाते नाथ लोक निज आई ॥
कह हरि गन्धारी सुत जूझे । तबअस पुनि संजयसों बूझे ॥
दो० श्री हरि पक्षी पाण्डु के जयकी आशाछूटि ।
अंध दीन्ह मेरे लिये शत सुत विधनै लूटि ॥
कहा कृष्ण सिरजै तवै सुनु माता अस कौन ।
हारि यहां मेटन चहै मनमानी किय जौन ॥
यह सुनि क्रोधा लुब्ध ह्वै शाप गँधारीदीन्ह ।
अबते छत्तिस बर्ष में जो मोकहँ तुम कीन्ह ॥
करि असमत गन्धारी शापा । निजकुलहतेसुनिजकरपापा ॥
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा । गुणगावतमुनिचलेअकाशा ॥
ब्रह्मा पास कही जो हेरी । यदुकुल नाश आइहै फेरी ॥
यहिविधि बीतिगये कछुकाला । आगे सुनहु नृपति भोहाला ॥
यक दिन ब्रह्मा अतिदुख पायो । अजहुँनकाशीश्रीप्रभुआयो ॥
अस मन समुझि देव ले साथा । गे द्वारकहि जहांब्रजनाथा ॥
करि परिक्रमा नायकरि शीशा । अस्तुति करत देवदिगईशा ॥
पाहि पाहि शरणागत वत्सल । हे कृपालु पालन श्रीअत्सल ॥
दीनानाथ देवकी नन्दन । मैं तव शरण भक्तपालनजन ॥
जय गोबिंदबासी बृन्दावन । जयतिदेवजयजगजनबन्दन ॥
जय जय जय माधव असुरारी । तारण तरण गौतमी नारी ॥
दशरथसुतजयजयजगपालक । जनकसुता बारनहरिबालक ॥
परशुराम निज रूप मानहर । बनहिवासकियनाशत्रिशिरखर ॥
मग मारीच बधन सीता छल । बानरसंगसहित हनुमतबल ॥
सेतु बांधि रावण को मारो । अवधपुरी प्रभु भक्ति उधारो ॥
कंसादिक सब दुष्ट सँहारण । चलियेनिजपुरश्रीजगतारण ॥
हे प्रभु भक्त बछल बनवारी । हँसि तब मधुर गिरा उच्चारी ॥
चलब कछुक दिन में हे देवा । यह सुनि लगे जनावन सेवा ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

दो० सुनि ब्रह्मा सहपुर सकल गे प्रसन्न तब सर्व।
सबलसिंह चौहान कहि भाषा मूशल पर्व॥

इतिश्रीमहाभारतेमुशलपर्वभाषासबलसिंहचौहानकृते प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

गे निजधाम देव समुदाई। अबनृप कथा सुनहुजोगाई॥
इत सुपाण्डु सुत पारथ जागे। कृष्णचंद्र सन बूझन लागे॥
पठयो मोहिं युधिष्ठिर भूपा। जोप्रथमहिं प्रभुमंत्र अरूपा॥
इतसों जाइ चलन जब चहे। तब कुंती माता बश रहे॥
अब पौत्रहिं दै राज्य सोहाई। जान चहत उत्तर नृपराई॥
चलन हेतु प्रभु तुमहूं भाखा। चलहु नाथ अब काहे राखा॥
यह सुनि धर्म बन्धु की बानी। सुनु नृप बोले शारँगपानी॥
दो० चलब कछुक दिनमें सुनहु रहौं इतै कछु काल।
सुनु असकहिराखतभये श्रीप्रभु करिकै जाल॥
रहे बहुत दिन आदर लहिके। अतिमुदसहितबारताकहिके॥
यकदिनहरिअसकह्योबिचारी। नाशहोइ केहिबिधि कुलकेरी॥
ताहि समय नारदमुनि आये। हरिगुणगावत आदर पाये॥
तिनसों बूझेउ यदुकुलनायक। नाश यत्न भाषो जेहि लायक॥
नारद कह बिन शाप दिवाये। देखिन परत कि युद्ध मचाये॥
यह भाषत नारद सुनु राई। ताहिसमयऋषिमुनिगणआई॥
आये व्यासशिष्य सब साथा। हमहूं हते सुनिय नरनाथा॥
शृंगी ऋषि भृंगी मुनिनायक। देवलकपिलआदिसुखदायक॥
सनतकुमार सप्तऋषि राजा। दुर्वासाऋषि सहित समाजा॥
बिश्वामित्र बशिष्ठादिक मुनि। अरुकौंडिल्यसुनौभाषतगुनि॥
दो० अरु भृगुनायक अंगिरा पाराशरऋषिराय।
देखि कृष्ण आदिक सकल परेपार्थ सहपाय॥
सो० उग्रसेन सह कृष्ण पायँ धोय भोजन दयो।
हलधरकीन्ह्योप्रश्न केहिकारण आगम सबन॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

बोले मुनिवर व्याससुहावन। अशनदेहु इतकछुदिनपावन॥
चतुर्मास बरषाऋतु पावन। देहुअशनयहिहितसबआवन॥
रहबइतै सबमुनि सुखदायक। करब सुतप जो आज्ञापायक॥
कहहलधर ममभाग्य अपारा। महा महामुनि जो पगुधारा॥
रहोदेव हम अशन सोहावन। टिकयोमुनिन्हअपावनपावन॥
नितप्रति भोजन सुभगबनाई। बिलग मुनिन्हप्रति देतपठाई॥
यहिबिधिकछुक दिवसनृपबीते। यकदिनसब शिकार हितरीते॥
प्रद्युम्नादि साम्ब सुत नाती। लै आज्ञा कै चढ़िसबभांती॥
खेलि शिकार मारि मृग रूरे। पुरहि पठाय चले मुदपूरे॥
आये मुनिवर जेहि बनबासा। बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्बासा॥
कोउकहमुनि भोजनहितआये। मांगत भीख कतहुँ नहिंपाये॥
मिलो पेटभरि इतै अहारा। परे ताहिते ये शठ द्वारा॥
कछु नहिं जानत हैं मुनि कोई। जो बिधि लिखा होतहै सोई॥

दो० कोउ कह हैं सर्वज्ञ निधि कृपा यत्न मुनिराज।
नृपन चाहियो दानशुभ मुनिवर भोजनकाज॥
सो० निंदो मति सबकोय इनको मानत कृष्णबलि।
जो बिश्वास न होय कत न परिक्षा लेहुतुम॥

तुरत ग्राम को दूत पठायो। मूशल काढ़ि एक लै आयो॥
पियो सुरा सब यादव बालक। भयोमस्त हरिइच्छा सालक॥
बांधिसाम्ब हियकाढ़ि सुहावन। मूशल राखिमध्य हियरावन॥
सुभग नारि गर्भिणी बनाई। केश मूल गहना पहिराई॥
गेंदन के तहँवां कुच कीन्हे। सेंदुर दे शिर बेंदी दीन्हे॥
बिछुवा आदि अभूषण जेते। कहँ लौं कहौं किये सब तेते॥
जाय बंदि मुनिवर दुर्बासा। बैठिबचन असकीन्हप्रकासा॥
हे मुनिवर सर्वज्ञ निधाना। पुत्री पुत्र जात नहिं जाना॥
जो कृपालु ह्वै तुरत बतावो। अतिशुभसुयशजगतमहँपावो॥
ध्यान धरी मुनिवर तहँ देखे। छलसमुझै कछु और न देखे॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

क्रोधित मुनिवर बोले बैना । सुत सुख देख्यो यहकुलनैना ॥

दो० बोले मुनिवर क्रोधकरि होय सत्य यहबैन ।
याही सुत के होतही मरै कृष्ण सह सैन ॥

सो० सकुलसंहरिहैंसर्व जिनटिकाय अपमान किय ।
अससुनिये नृपपर्व मरैरुक्मिणी जवनसिय ॥

यहसुनिसकल भभरितबभागे । मनहुँ सिंह कोउ सोवतजागे ॥
मुनिहि सकोप बकत बहुबैना । इतआये सब निजनिज ऐना ॥
सकल बात सब काहुन पावा । जुरिसमाज सबनृपपहँ आवा ॥
सुनत कृष्ण अतिभये प्रसन्य । उग्रसेन सह शोचत अन्य ॥
शोचत बसुदेव अरु बलरामा । बारबारकहि शिवहरि नामा ॥
तब नृप मंत्री ज्ञात बोलाये । उद्धव सात्यकादि सब आये ॥
शोचसुमत करि यह ठहराये । बोलि लोहार सहस्रन आये ॥
मूशल काढ़ि छोरि तब लयऊ । चूरन करि समुद्र महँ बहेऊ ॥
ताते भयो सुखर उत्पन्य । औरौ सुनौ कलुक नृप अन्य ॥
एक चूर जो लोह बहायो । शापसत्य हित मीनसो खायो ॥
मीनहि ताहि पकरिकै लावा । बालि नाम धीमर जो आवा ॥
चीरेउ हृदय निकारेउ लोहा । तीक्षण धार थोथ महँ सोहा ॥

दो० सुनु नृप भावी मिटै कस अरु श्रीकृष्णप्रताप ।
जो न चहत श्रीकृष्ण प्रभु करत कोटिकहशाप ॥

कछु दिन बीतिगये यहि भांती । आनँदजातदिवस अरुराती ॥
श्रीप्रभुकृष्ण वृत्य अस जागी । द्वारावती शाप नहिं लागी ॥
असमनसमुभि कृत्तिभगवाना । चहहुँप्रभासकरियअसनाना ॥
यहसुनि सकल बुलाय सुबासी । भोर चलनकह आनँदरासी ॥
यह सुनि उद्धव हरिपहँ आये । नमस्कारकरि अस्तुति गाये ॥
पुनि रोवन लागे हाहा कहि । कबमैं रहौं नाथदुखयहसहि ॥
तव मन में हौ निजपुर जैहौ । नाथ लौटि नहिं द्वारहि ऐहौ ॥
ताते रहौ जहां हम पैये । जो मन चहौ नाथ सो कैये ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

दो० कहौ नाथ काकरिय हम जातेहोहुँ सनाथ।
असकहिलागे रुदनतब धरेउचरणपर माथ॥
सो० भाष्योश्रीप्रभु बैन करतशोच तुमहौ कहा।
धरिपद निजहियऐन करौजाय तपबद्रिका॥
यहदेखतहौ जौन सकल जग। सोजानहु सबजाहि एकमग॥
हय गय द्रब्य पुत्र अरु दारा। सोसबजानु झूठ ब्यवहारा॥
मरणकालकोउकाम न आवत। कविकोबिद मैसज्जनगावत॥
मम नाभीते कमल भयो जब। ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तब॥
ताते भई सृष्टि बिस्तारा। मैंहूँ धरेउँ बहुत अवतारा॥
चारि वेद श्वासन ते गाये। मुखते द्विज भुजक्षत्रियगाये॥
वैश्य जानु पद शूद्र बनावा। याहीमें सब जग बेलमावा॥
तब श्रीकृष्ण कृपाअतिकीन्हे। ब्रह्म देखाय दुःख हरिलीन्हे॥
औ यह कह्यो सुनौ उद्धव तुम। अबतुमजाउ बद्रिकाकोगुम॥
नाश होन चाहत अब द्वारा। किहेउदिवसप्रतिभजनहमारा॥
वृक्ष योनिते मनुज होत जब। सुमिरणमेरो उचितसुनहुतब॥
सुनि उद्धव तब शीश नवायो। परिक्रमा करि तुरत सिधायो॥
इत यदुबंशी भोर भये जब। चले प्रभास काल प्रेरित तब॥
सजिसजिसाजचले सब कोई। पुरजन कृष्णसहितबलिजोई॥
दो० कहँलगि कहिये सुनहुनृप चले सहित यदुनाथ।
सात्यकि कृतबर्मा सहित यदुजन पुरजनसाथ॥
उग्रसेन बसुदेव बिन रह्यो न कोइ पुरमाहिं।
अर्जुन राख्यो कृष्णप्रभु सुखदसुगृहिके बाहिं॥
सो० उद्धव ज्ञान बुझाय बद्रीदिशि भेजेउ तिन्हैं।
उद्धव दुःख नशाय ब्रह्म मिले करि नेहबर॥
पारथ राखि नगर रखवारी। आपु चलनहित कीन्हतयारी॥
दारुक अरु पारथसों कहेऊ। आयो कालिह नारिसह रहेऊ॥
गे सब प्रभाक्षेत्र सुख पाई। तहँ नारद मुनि बीण बजाई॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

नारद आयसु दीन कृपाला। जाहुनगर द्वारकहिविशाला ॥
सिखवो तात मातु नृपजाई। मोह मूल को शूल नशाई ॥
तहँनारद असज्ञान सिखावत। भूमिअकाशहिनिजदरशावत॥
दो० वृक्षयोनिते मनुज तनु पायो पुनि हरिपूत।
तातेअजहुँ न सुमिरियो होनचहतहौ भूत ॥
पारब्रह्म हरिसुत लयो पूर्बभाग्य मुनिराज।
भक्ति मुक्ति मांगीनहीं अबआवतिहै लाज ॥
सो० मुनिबोलेइमि बैन तुवहित हेतहि कहतहम।
यकइतिहास गुनैन नौयोगीश्वर जनकको ॥
नौयोगीश ऋषभ सुत आये। जनक देखिकै शीश नवाये ॥
आश्वासन कीन्हेउ बहुभांती। सिंहासन दीन्हो मन माती ॥
कृपा कीन्ह ममभाग्य अपारा। ऋषभदेव सुत जो पगुधारा ॥
जैसेकियोपवित्र मोहिंचरणन। तैसे पूछत करिये बरणन ॥
तब बोले योगी बर बैना। निजइच्छित तुम पूछत हैना ॥
कहा जनक कर सम्पुटकरिकै। कौनबस्तुअस्थिर बिनभरिकै ॥
जो कह धन स्त्री अरु बालक। आज्ञाकरिकैअरुकुलपालक ॥
ताते मुनि कछु अस्थिर नाहीं। धनदकुशासन सब मरिजाहीं॥
ताते शोक होत है भारी। है अस्थिर को कहौ बिचारी ॥
जामें घट न बढ़ै कछु ऐसी। अस्थिर नाश न कहिये तैसी ॥
बोले कश्यप नामक योगी। प्रथमभयो हरिहर यश भोगी॥
बहुसुखप्राप्त उन्हें मिथिलेशा। जे हरिभक्ति ते त्यागिअँदेशा ॥
पुत्र दार धन सब परिवारा। भाग्यमानजिमिअलबकरारा ॥
जे लपटे पुत्रादिक नेहा। ते जब मरे बिकल संदेहा ॥
ताते नाश बस्तु है जोई। अलग रहै सुख पैहै सोई ॥
हरि अवतार यहिहेतु धरत हैं। गाय जाहि नरनारि तरतैं ॥
जो मन लाग एकधा नाहीं। थोरा थोरा कीजिय ताहीं ॥
जिमिभूखा अन ज्योंज्यों खैहै। त्यों त्यों बूत तासु के ऐहै ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

जोकोउमगनितप्रतिचलिहैंनर। एक दिवस वैजाहिं पहुँचिवर ॥
जो न चली वह पहुँची कैसे। हे मिथिलेश भक्ति है तैसे ॥
माया थोरी थोरी छूटै। भक्ति थोरही थोरी जूटै ॥
दो० पारब्रह्म जो एक है आद्यो ब्रह्म स्वरूप।
सोई तौ थिरता सुनौ और झूठ है भूप ॥
सो० योगीकहि भे मौन करजोरे कह जनकतब।
कहियेतपमितभौन भक्तिरूप किमिहोतहै ॥
तब हरिनाम दूसरो भाई। सुनु नृप कहत सुलक्षणगाई ॥
कबहुँ हँसत जब होइँ प्रसन्नित। कबहुँ रोष लक्षण उनकेइत ॥
हंसन हेतु यह सुनहु बिदेहा। करत भक्ति पर तुमहरिनेहा ॥
धरते सगुण गाय जाते जन। भवसागरतरिजाहिं जौनबन ॥
गाय ध्यानधरि तरियतु जाते। ये लक्षण हंसन मन माते ॥
रोषन कर लक्षण यहिकाजन। सोअब सुनहु कहतमैंराजन ॥
आयु हमारी बीती भारी। फँसो रहो ममता अवतारी ॥
बिनु हरि भक्ति बीतिगे सोई। हे जनकेश देत बय रोई ॥
भक्ति और सुनु तीन प्रकारा। उत्तम मध्यम और नकारा ॥
सकल चराचर देखिय जौन। चौरासी लक्षित नृप तौन ॥
यक सों लखत ब्रह्म सबमाहीं। हैं लक्षण ये उत्तम आहीं ॥
साधू संगति सत पथ चलिये। हैं ये लक्षण मध्यम पलिये ॥
पुनि ये तेज बराबरि सबमें। नहिंसमुझत बिदेह वे जगमें ॥
अब निकृष्ट लक्षण ये सुनिये। माया मोह फँसे हैं दुनिये ॥
काहू पहर असमरण पूजा। तें करिलेहिं निकृष्टित मूजा ॥
दो० जबलगितृष्णानहिंछुटत तौलगिनहिंन बिरक्त ॥
दूसर योगीश्वर कहै तब लगि बिषयासक्त ॥
तीनिप्रकारित भक्तिके सुनुलक्षण मिथिलेश।
हाथ जोरि पूछन लगे मेटहु नाथ कलेश ॥
सो० माया जाको नाम नारायण में लीन है।

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

की है बिलग अकाम तौन नाथ वर्णन करौ ॥
अंतरिक्ष जो तीसर योगी । सुनिये नृपति रामयशभोगी ॥
माया हरि की ईहा जानो । ताको त्रिगुण रूप है मानो ॥
सात्विक राजस तामस जोई । मारण उत्पति पालन सोई ॥
बिनु हरि मायाकर भ्रमजाला । कामक्रोध मदलोभ कराला ॥
नाहिंन छूटि सकत कोउ राजा । चहिये करिबो उत्तम काजा ॥
महाप्रलय ऊपर हरि रचना । चाहतजबहिंसुनहुनृपबचना ॥
तब माया की ओरहि देखत । माया महातत्त्व को पेखत ॥
महातत्त्व सब उत्पति करिकै । सब जगदेत बराबरिभरिकै ॥
दो० नाशकरन चाहतजबहिं मूशल धारावर्षि ।
सुनो करत मायासहित पारब्रह्म तहँहर्षि ॥
तेहिते हरि ईहा सुनो मायाकर ब्यवहार ।
समुझब हरिको उचितहै सुनुजनकेशउदार ॥
जो माया हरि ईहा कहिये । संसारी किमि उतरनचहिये ॥
माया ते छूटै किमि योगिनि । तुमहौ वैद्य बताइ अरोगिनि ॥
पर बुधि नाम चौथ है जौन । जब जान्यो हरि ईहा तौन ॥
माया हरिइच्छा जब जानी । तब हरि ईहा एकै मानी ॥
हरि परिक्रमा करै नर जोई । पावै सफल अफल नहिंहोई ॥
दो० ब्राह्मण लक्षण सहितहै ब्राह्मणकी मतिधीर ।
नहिंसो ब्राह्मणशूद्रसमताहिकहतमतिपीन ॥
ऐसो जानौ जनक नृप चारि बर्णकी चाल ।
पारब्रह्म को जानिबो नातरु सोई काल ॥
पारब्रह्म जानो जिन्हैं सो पायों मों लीन्ह ।
नातरुहै सब अन्यथा जन्म बिधाताकीन्ह ॥
बोले जनक राय कर जोरी । कोअस बिना हृदय जो होरी ॥
कौन जीव सोवत हैं नाहीं । जलथलनभ अकाशकेमाहीं ॥
बोले पंचम योगी बैना । हृदय तात पत्थरके हैंना ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

सोवत मीन सुनो नृप नाहीं। औरसकल श्रमबश ह्वै जाहीं॥
दो॰ जगमें गरुआ कौनअति अतिऊंचो है कौन।
बोले षष्टमयोगिवर अतिबर बुधिको भौन॥
मेरोगिरि ते गरू है मात सुनो नृप बात।
आसमानते ऊंच अति जानो है निज तात॥
सो॰ कैसे मननहिं लाग विषया में मन सबनकर।
बोलेउ मुनि अनुराग सप्तनसुषद सोहावनो॥
ऐसे कृपा कृष्ण की होई। मन लागै हरियह सुनुसोई॥
जेते रोवां जानौ तनुमें। तेते रोकन हारे जनमें॥
पाप पुण्य कछु जगमें नाहीं। कर्म भोगवत है सब याहीं॥
बोले तब जनकेश उदारा। काके बीज जगत बिस्तारा॥
कह मुनि पारब्रह्म को जानौ। बीज कौन काको को मानौ॥
परदादा के दादा जाये। दादाके पितु निज तब भाये॥
ताके सुत यह देह भई सुनु। को ताको अस सकै भूपगुनु॥
सो॰ कहेउ जनक यहबात कहौ कर्म ब्यवहार अब।
कहमुनि सुनुनृपतात कर्मआदि ब्यवहार सब॥
दो॰ कही पूर्व निष्ठाद्विधा ज्ञान योग संचार।
साखिन कह योगीनकह कर्म योग ब्यवहार॥
अनारभ्य के कर्म ते होत न नर निष्कर्म।
सर्वत्याग संकल्पते मिलत न सिद्ध सुधर्म॥
मनसा इन्द्रिन रोकिजे करत न तत्त्व बिचार।
रहत लगाये बिषय में मनसो मिथ्याचार॥
अस कहिकै योगी सकल गये ब्रह्मपुर ओर।
असकहि नारदमुनिगये सकलमुनिन शिरमौर॥
अब नृप सुनहु कथा मनलाई। वहा टिके यदु यदुकुलराई॥
गड़े बितान अमोलिक लाखन। राखनलगे सूरप्रभु माखन॥
बस्तु अमोलिक भांतिन केरी। बाजहिं ठौर ठौर प्रतिभेरी॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

सेना देखि लगत भय हियमें । तबहिंबिचारे श्रीप्रभुजियमें ॥
सबते कहेउ चलिय अस्नाना । करिअस्नानकीन्ह सबदाना ॥

दो० प्रभाक्षेत्र अस्नानकरि निशिहि टिकेउयदुबंश ।
उतसुदेवमिलिसुनुनृपति खैंच्योनिजनिजअंश ॥

हलधर सहपुनि होत बिहाना । सुरापानकरि गे अस्नाना ॥
भे मदमत्त उछाड़ें कूदें । और हनैं पुनि आंखी मूँदें ॥
देहिं परस्पर गारि प्रचारी । नाहीं हँसहिं देहिं करतारी ॥
पितु सुत नहिं घरनी हो बारा । लाजहीन लपटहिं जनुदारा ॥
लटपटाहिं धरणीह्वौ गिरहीं । भाजतलड़हिंदौरितेहिधरहीं ॥
करहिंजलहि अस्नानसोहावन । आपुबीरदल लागो आवन ॥
पुनिपुनि जलउछालसबकरहीं । डंड ठोंकि पितुसुतसों भरहीं ॥
एक पकरि बोरहिं जल माहीं । बूड़हिं रोवहि छांड़हिं नाहीं ॥
एकहि डारि सुजल के माहीं । चढ़हिं सहस्र सहस्रन ताहीं ॥
उत सात्यकि कृतबर्मा जूटे । भिरहिं प्रचारि केश शिरछूटे ॥

दो० लरहिंभिरहिं यहिविधि सुनहु रहो न काहूध्यान ।
शापवश्य राजासुनो कोसुत कोपितु आन ॥

सो० जलउछाल करिबीर आये निजनिज पक्षलखि ।
जहँ सात्यकि कृतबर्म ह्वै समाज उमहत दोऊ ॥

तब सात्यकि कृतबर्म बखाना । भागेसि शठ नत कालनेराना ॥
मम सहाय पाण्डव रण जीते । मारे दुर्योधन भट रीते ॥
सो मैं शत्रु आउँ कृत तोरे । भागिबचो नाहिं हनत सबेरे ॥
ताते अजहुं मानु शठबानी । नत अबहोनचहतकुलहानी ॥
कइ कृत होत अधम केहिधोखे । निजकरबधबहनब शरचोखे ॥
मानि कृष्ण प्रभुकेरि रजाई । नत मारत बहु पांडवराई ॥
अजहूं सात्यकि जीह संभारो । नत अबशरण देतशिरभारो ॥
सुनि सात्यकि कोपित ह्वै मनमों । मानहुं जीतिचले रणघरमों ॥

दो० अरे अधम सात्यकि कहेउ सोवतते बहुमारि ।

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

सत्रहजितपाण्डवसुवन अजहुँबकत बशहारि ॥
सो० तब सात्यकि भटयुद्ध पारथ गुरुको ध्यानधरि।
लै हथ्यार हित युद्ध तदपि मध्य आवत भयो ॥

तब कृतकह अति कोपित बैना। शठ धर्मातम देख्यों नैना ॥
भूरिश्रवा हनि डारन चहेऊ। ताहि समय बरपारथ रहेऊ ॥
भुजाकाटि तब हत तुम कीन्हा। यह धर्मातम तव हमचीन्हा ॥
असकहि सहपक्षी बर बीरा। लै हथ्यार आयो तेहि तीरा ॥
सात्यकि पक्ष सहित लै हाथा। बज्रनाभिभजिगोतजिसाथा ॥
जायबचो अनिरुध सुतभागी। शापबइयलागी तब आगी ॥
तब सात्यकि प्रचारि निजपच्छी। कृतलैकरि सेनानिजअच्छी ॥
वाक्य बादि करि करि उतकर्षा। लागे करन मूल शर बर्षा ॥
चहुंदिशि बाणगदा असिधारा। भिरेबीर करि क्रोध अपारा ॥
तदपि न जूझो कोउ बरबीरा। टूटिगिरे हथियार व तीरा ॥
तब सब समुद्रफेन खरलीन्हा। ताते मारु भयानक कीन्हा ॥
सुरामस्तभट जूझैंगिरिगिरि। उलटिपलटिलपटैंपुनिभिरिभिरि ॥
भाजत लखहिं प्रचारहिं फेरी। मारहिं सुभटफेनु तेहि घेरी ॥

दो० शापकृष्ण मंशा प्रबल अबला मनुष्य उपाउ।
जे गदादि जूझे नहीं ते जूझे खर घाउ ॥

सो० जूझिगिरे बहुबीर जे रहिगे प्रभुपहँ चले।
योगाभ्यास गंभीर तनु त्याग्यो जे सहसबर ॥

कृष्णचन्द्र तब भागि पवाँरे। रहे जवनते युद्ध बिचारे ॥
मरे जूझि एकोनहिं बाचे। मन क्रम रहे शूर सब सांचे ॥
इत तहँ श्रीप्रभु कृपानिधाना। बैठे पीपल वृक्ष सुजाना ॥
तातरु बैठिकीन्ह शुभआसन। लीलाकीन्हसुभगहितदासन ॥
धरे जानुपर चरण कृपाला। ताहि समय आयो बहुकाला ॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

जान्यो नयन मृगाकरि सोहत । लैकै धनुष बाण मन मोहत ॥
बालिनाम बानर त्रेता कर । धीमर रूप छांड़ि दीन्होशर ॥
चरणमध्य चमकत तहँ जानी । आयोलेन शिकार गिल्यानी ॥
देखि कृपालु कृष्ण भगवाना । बन्दि चरण तब ऐंच्योबाना ॥
कह कृपाल बदला तुमलीन्हो । रथहिचढ़ाय परमपद दीन्हो ॥
उत अर्जुन सब रथहि चढ़ाई । रानिन सबहिन लीन्हचढ़ाई ॥
दारुक पास कही अस बाता । लै रथ जाहु अग्र तुमताता ॥
पाछे हम आवत सह नारिन । जाते होइ न श्रम कंसारिन ॥
दारुक हांकि सुभग रथगयऊ । उतरिरथहिहरिचरणननयऊ ॥
उतरत दारुक के नरपाला । हय समेत रथउड़िगोहाला ॥
यहलखि दारुक बिस्मयपावा । सब चरित्रतब कृष्णबतावा ॥
यह सुनि सूत परेउ गिरधरणी । तब हरिकही दुःखकी हरणी ॥
तुम धरिध्यान त्यागु तनुजाई । अर्जुन पासकहेउ असजाई ॥
कछुक दिवस में बुड़िहै ग्रामा । कहेउजाइँले निजनिजसामा ॥

दो० गीता ज्ञानहिं राखिहिय जाय बद्रिका धाम ।
अबआयो कलियुगप्रबल इतै न रहिबोकाम ॥
ऐसे कहते कहत हरि गह गह हने निशान ।
चले ब्रह्मपुर आपुप्रभु किंकिणिनाद विमान ॥
सो० यहिविधिकृष्णकृपाल गयेधाम निजनिजसुनहुँ ।
दारुक गयो उताल अर्जुन सों सब यों कहेउँ ॥

सुनि अर्जुन सह यदुकुल नारी । रोवहिंगिराहिंमुर्छिसुकुमारी ॥
दारुक जाय कतहुँ तनुत्यागा । तबसबहिनकर मुर्च्छाजागा ॥
सह नारिन गे जहँ रणपावन । देखिभूलिगो कोकत आवन ॥
पटरानी अरु यदुकुल नारी । अतिदुखबूड़िमरीं कछुबारी ॥
कछुक चितारचिधरिसुतनाती । पतिसहजरतभईं सब जाती ॥
गईंसकलमिलिनिजनिजअंशन।अनिरुधसुतबिनरहेउनबंशन॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

इत अर्जुन पुनि धीरज धारा। बज्रनाभ सह गे नृप द्वारा॥
पढ़ै सुनै जो कथा सुहावन। बंश वृद्धि होवै अति पावन॥
दो० पापनशै कीरति बढ़ै ब्यास गिरा परमान।
भणितपर्व मूशल कथा सबलसिंह चौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेमुशलपर्वणि
नामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri

Courtesy Dr. Ranjit Bhargava, Desc. Naval Kishore. Digitized by eGangotri